Scientific Innovation Magazine
ISSN : 2584-1157

प्राकृतिक खेती का कृषि में महत्वपूर्ण स्थान

स्वपनिल सिंह[1] एवं डॉ0 दीक्षा गौतम[2]
शोध छात्रा[1] एवं सहायक प्राध्यापक[2]
[1]परिवारिक संसाधन प्रबंधन एवं उपभोक्ता विज्ञान विभाग
सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, आचार्य नरेन्द्र देव कृशि एवं प्रौधौगिक **विश्वविद्यालय**, कुमारगंज अयोध्या
[2]परिवारिक संसाधन प्रबंधन एवं उपभोक्ता विज्ञान विभाग
सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, बॉदा कृशि एवं प्रौद्यौगिक **विश्वविद्यालय**, बॉदा, उत्तर प्रदेश

प्राकृतिक खेती को रसायनमुक्त खेती के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसके अन्तर्गत जब किसी खेत में हम कीटनाशक दवाओं का प्रयोग नही करते है तो वहां रहने वाले अरबो–खरबों जीव–जन्तु, फंगस, देशी केंचुए इत्यादि सजीव हो उठते है। प्राकृतिक खेती का मुख्य आधार देसी गाय है प्राकृतिक खेती कृषि की प्राचीन पद्धति है। प्राकृतिक खेती में रासायनिक कीटनाशक का उपयोग नहीं किया जाता है। इस प्रकार की खेती में जो तत्व प्रकृति में पाए जाते है, उन्ही को खेती में कीटनाशक के रूप में काम में लिया जाता है। प्राकृतिक खेती में कीटनाशकों के रूप में गोबर की खाद, कम्पोस्ट, जीवाणु स्वाद, फसल अवशेष और प्रकृति के उपलब्ध खनिज जैसे– रॉक फास्फेट, जिप्सम आदि द्वारा पौधों को पोषक तत्व दिए जाते है। प्राकृतिक खेती में प्रकृति में उपलब्ध जीवाणुओं, मित्र कीट और जैविक कीटनाशक द्वारा फसल को हानिकारण जीवाणुओं से बचाया जाता हैं।

प्राकृतिक खेती की आव□यकता

1. गत वर्षो से खेतो में उपयोग होने वाले रसायनो कीटनाशकों से खेती में काफी हद तक नुकसान हुए है।
2. रसायनिक खेती करने से मनुष्य की स्वास्थ्य पर भी प्रभाव पड़ा है।
3. रसायनिक खाद और कीटनाशक के उपयोग से भूमि की उर्वरक क्षमता भी क्षीण होती जा रही है। जिससे मिट्टी के पोषक तत्वों का संतुलन भी अस्थिर हो गया है।
4. खेती में खाने–पीने की चीजे काफी उगाई जाती है जिसे हम उपयोग में लेते है। इन खाद्य–पदार्थो में जिंक और आयरन जैसे कई सारे खनिज तत्व उपस्थित होते है जो हमारे स्वास्थ्य के लिए काफी लाभदायक है।

प्राकृतिक खेती के फायदे

1. पर्यावरण की दृश्टिकोण से

प्राकृतिक खेती को अपनाने से भूमि के जल स्तर में वृद्धि होती है, जिससे मिट्टी अत्यधिक उपजाऊ बनती है। प्राकृतिक खेती करने से फसल उत्पादन की लागत में कमी एवं आय में वृद्धि होती है।

2. मिट्टी की दृश्टिकोण से

Scientific Innovation Magazine
ISSN : 2584-1157

जैविक खाद के उपयोग करने से भूमि की गुणवत्ता में अत्यधिक सुधार आता है। तथा साथ ही साथ भूमि की जल धारण की क्षमता भी बढ़ती है।

3. **किसानों की दृश्टिकोण से लाभ**

प्राकृतिक खेती करने से भूमि की उपजाऊ क्षमता में वृद्धि हो जाती है। प्राकृतिक खेती को अपनाने से फसलों की उत्पादकता में वृद्धि तथा किसानों की आय में भी वृद्धि होती है।

भून्य बजट प्राकृतिक खेती के चार सिद्धान्त

1) **जीवामृत**– इसमें पालतू पशुओं के गोबर, मल–मूत्र आदि को उपयोग में लाया जाता हैं इसमें मिट्टी में सूक्ष्म जीवों को एक अनुकूल स्थिति प्राप्त होती है।
2) **बीजामृत**– बीजामृत मे भी जीवामृत के समान सामग्री होती है। यह अंकूरों को मिट्टी एवं बीज जनित बीमारियों से बचाती है।
3) **आच्छादन**– आच्छादन के माध्यम से मृदा में आद्रता तथा वातन में सहायता मिलती है।
4) **वाश्प**– वाष्प एक ऐसी स्थिति है जिसमें वायु एवं जल के कण मृदा में उपस्थित होते है। इसमें अत्यधिक सिंचाई की कमी आती है तथा कम समय के लिये ही निश्चित समय पर सिंचाई की आवश्यकता होती है।

प्राकृतिक खेती के उद्दे□य

प्राकृतिक खेती के जन्मदाता सुभाष पालेकर के अनुसार प्राकृतिक खेती का मुख्य उद्देश्य सूक्ष्मजीवों का मिट्टी में बढ़ावा देना है, जिससे खेती की उर्वरा शक्ति में वृद्धि हो सके। सुभाष पालेकर ने बताया कि प्राकृतिक खेती की तकनीक जैविक खेती से अलग है, क्योंकि जैविक खेती में खाद एवं जैविक कीटनाशकों का उपयोग बाजार से लाकर किया जाता है।

प्राकृतिक खेती और जैविक खेती में अन्तर

जैविक खेती	प्राकृतिक खेती
• जैविक खेती में जैविक उर्वरक और खाद जैसे कम्पोस्ट, गाय के गोबर की खाद आदि का उपयोग किया जाता है। • जैविक खेती के लिए पुराने समय पर आधारित जैसे– जुताई, गुडाई, निराई आदि की आवश्यकता होती है।	• प्राकृतिक खेती में न तो रसायनिक और न ही जैविक खाद डाली जाती है। • प्राकृतिक खेती में मृदा की सतह पर ही रोगाणुओं और केचुओं द्वारा कार्बनिक पदार्थो के अपघटन को प्रोत्साहित किया जाता है इससे धीरे–धीरे मृदा में पोषक तत्वों की वृद्धि होती है।

प्राकृतिक खेती की वि□ोशताए–

1. प्राकृतिक खेती वह खेती होती है, जिसमें फसलों पर किसी भी प्रकार का रसायनिक कीटनाशक एवं उर्वरकों का प्रयोग नहीं किया जाता है।

2. प्राकृतिक खेती के लिए पेड़–पौधो के पत्ते की खाद, पशुपालन, गोबर खाद का प्रयोग किया जाता है।
3. प्राकृतिक खेती, कृषि की प्राचीन पद्धति है। यह भूमि के प्राकृतिक स्वरूप को बनाए रखती है।
4. प्राकृतिक खेती में जीवामृत (जीव, अमृत) धन जीवामृत एवं बीजामृत का उपयोग पौधों को पोषक तत्व प्रदान करने के लिए किया जता है।
5. प्राकृतिक खेती प्रमुख विशेषता यह भी कि इस पद्धति को भारत में ऋषि खेती भी कहते है।

गौ आधारित प्राकृतिक खेती–

1. **बीजामृत (बीज भाोधन)**– देशी गाय का गोबर, मूत्र तथा बूझा चूना आधारित मिश्रण का बीज एवं पौधो के जड़ो पर लेपन लगाने यह पौधों के बीज और भूमि जनित रोगों से सुरक्षा प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त बीजामृत के उपयोग से बीज अकुंरण क्षमता में वृद्धि होती है।
   निर्माण तथा प्रयोग करने की विधि– 5 किलो गोबर, 5 लीटर गोमूत्र, 50 ग्राम चुना, 20 ली0 पानी में मिलाकर 24 घंटे अर्थात् एक दिन के लिये रख दें। तत्पश्चात् लकड़ी की सहायता से दिन में दो से तीन बार घोल कर मिश्रण का प्रयोग 100 किलो बीजो पर किया जा सकता है तथा इसका प्रयोग छाव में सुखाकर बुआई करें।
2. **जीवामृत**– जीवामृत का प्रयोग किसी भी भारतीय नस्ल की गाय के गोबर, गुड, बेसन तथा सजीव मिट्टी के मिश्रण से बनाया हुआ घोल भूमि में सूक्ष्म जीवाणुओ का प्रयोग किया जाता है।
   निर्माण तथा प्रयोग करने की विधि– गोमूत्र 5–8 ली0, गोबर 10–11 किलो, गुड़ 2–3 किलो, दलहन आटा (बेसन) 1–2 किलो, एक मुठ्ठी जीवाणुयुक्त मिट्टी (100 ग्रा0), पानी 200 ली0 मिलाकर ड्रम को जूट की बोरी से ढक कर छाया में रखना चाहिए। 48 घंटे बाद छानकर एक सप्ताह के अन्दर ही प्रयोग करना चाहिए।
3. **घन जीवामृत**– घन जीवामृत जीवाणु युक्त सूखा खाद है जिसे बुवाई के समय या सिंचाई के 3 दिन बाद भी प्रयोग कर सकते है।
   निर्माण तथा प्रयोग करने की विधि– गोबर 100 किलो, गुड 1–2 किलो, आटा दलहन 1 किलो, मिट्टी जीवाणुयुक्त 100 ग्रा0 उपर्युक्त सामग्री में इतना गोमूत्र (लगभग 5 ली0) मिलाए जिससे वह वेस्ट जैसा बन जाए तथा इसे 48 घंटे छाया में बोरी से ढक कर रखें। इसके बाद छाया में ही फैलाकर सुखा ले, इसका प्रयोग 6 माह तक सकते है। एक एकड़ में 1 कुतंल तैयार कर घन जीवामृत देना चाहिए।

निश्कर्श–

कृषि के क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए तथा किसानो की आय में बढोत्तरी करने के लिए प्राकृतिक खेती का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है।